वैदिक व्याख्यान माला — २९ वाँ व्याख्यान

वेदकी दैवत संहिता

और

वैदिक सुभाषितोंका विषयवार संग्रह

लेखक

पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल, साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार

स्वाध्याय—मण्डल, पारडी (सूरत)

मूल्य छः आने

ॐ

वेदकी दैवत संहिता

और

वैदिक सुभाषितोंका विषयवार संग्रह

(एक अत्यंत आवश्यक व्यवस्था)

वेदका धर्म सब धर्मोंसे प्राचीन है। विश्वके पुस्तकालयमें वेद, विशेषतः ऋग्वेद सबसे प्राचीन पुस्तक है। इस विषयमें सब विद्वानोंका ऐकमत्य है। ऐसे वेदके लक्षण पूर्व मीमांसाकार भगवान् जैमिनी मुनी इस तरह करते हैं—

ऋचाका लक्षण

ऋक् यत्रार्थवशेन पादव्यवस्था ॥ ३५ ॥

सामका लक्षण

गीतिषु साम ॥ ३६ ॥

यजुका लक्षण

शेषे यजुः शब्दः ॥ ३७ ॥ मीमांसा दर्शन २।१

१ ऋग्वेद मंत्रका लक्षण यह है— जहां अर्थके अनुसंधानसे चरणोंकी व्यवस्था होती है, वह ऋग्वेदका मन्त्र है।

२ साम मन्त्रका लक्षण यह है— जो मंत्र गाया जाता है वह सामका मंत्र है।

३ यजुर्मंत्रका लक्षण यह है— जो ऋचा (पादबद्ध मंत्र) नहीं है और जो (गाने योग्य) साम नहीं है वह गद्य मन्त्र यजु कहा जाता है।

ये तीन लक्षण तीनों वेदोंके मंत्रोंके जैमिनी महामुनिने अपनी पूर्व मीमांसामें दिये हैं। पादव्यवस्था जिस मंत्रमें है वह ऋग्वेदका मंत्र है, जो गाया जाता है वह वेदमंत्र साम है और जो शेष गद्य मंत्र है वह यजुर्वेद मंत्र है।

ये लक्षण सचमुच मननीय हैं। जिस मंत्रमें चरण हैं वह ऋचाका मंत्र है। इस लक्षणको मनमें धारण करनेसे आज प्राप्त होनेवाले ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेदके चरणवाले सब मंत्र ऋग्वेदके मंत्र हो गये। अथर्ववेदमें जो गद्य मंत्र होंगे उनको छोडकर चरणवाले सब मंत्र ऋचा ही कहे जायंगे। इतना ही नहीं परंतु यजुर्वेदमें जो जो मंत्र चरणवाले हैं, पादबद्ध हैं उनका नाम भी ऋचा ही हुआ।

सामका निर्णय

जिनका गान किया जाता है वह साम है। 'साम' में 'सा+अम' ये दो पद हैं। 'सा' का अर्थ 'ऋचा' है और 'अम' का अर्थ स्वर या आलाप है। आलापके साथ जो मंत्र गाया जाता है उसको 'साम' कहा जाता है।

या ऋक्, तत् साम। छां० उ० १।३।४

सा च अमश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्।
बृ० उ० १।३।२२

'जो ऋचा है वह साम है।' अर्थात् जो पादबद्ध मंत्र गाया जाता है वह साम कहलाता है। सामवेदमें जो मंत्र हैं वे ऋग्वेदके ही मंत्र हैं। जो सामवेदके मंत्र इस ऋग्वेदमें नहीं हैं वे ऋग्वेदकी शांख्यायन संहितामें हैं। तात्पर्य 'जो ऋचा है वही साम है' यह सत्य है। अर्थात् सब सामवेदके मंत्र ऋग्वेदके ही मंत्र हैं। प्रत्येक चरणबद्ध मंत्र गाया जा सकता है। हमने ऋग्वेदके तथा अथर्ववेदके मंत्र ताल स्वर आलापमें गानेवाले विद्वान् देखे हैं। अनेक रागोंमें वे इन मन्त्रोंका उत्तम गायन करते हैं। पं० गजानंदशर्मा देवरात नामक एक वेदके प्रकाण्ड विद्वान् हैं। इनका पता— "ब्रह्मचर्याश्रम, गोकर्ण" है। वे इस तरह ऋग्वेद मंत्रों का गायन करते हैं। उनके शिष्य भी ऐसे

गायन करनेवाले हैं। कोई भी उनको बुलाकर वेदमंत्रोंका इस तरहका गायन करवा सकते हैं। और सुनकर अपूर्व आनंद प्राप्त कर सकते हैं।

अर्थात् ऋग्वेदके मंत्रोंका गायन होता है और इस तरह जो गायन होता है उसका नाम साम गायन है। मूल ऋग्वेदके मन्त्रका गायन किस तरह होता है वह अब देखिये—

अग्न आ याहि वीतये, गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि॥

ऋग्वेद ६।१६।१०

यही मंत्र सामवेदमें इस तरह लिखा जाता है—

अग्न आ याहि वीतये, गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि॥

सामवेद १।१।१।१

जहां ऋग्वेदमें अक्षरके नीचे स्वर अर्थात् अनुदात्त स्वर होता है वहां सामवेदमें ३ अंक उस अनुदात्त स्वरका सूचक रहता है। जहां ऋग्वेदमें ऊपर अक्षरके सिरपर खडा स्वर होता है, उदात्त स्वर जहां होता है वहां '२' अंक उदात्त स्वरका सूचक रहता है। अनुदात्त स्वरके पीछला स्वर उदात्त होता है किसी समय ऋग्वेदमें यह दर्शाया नहीं जाता, पर सामवेदमें यह '२' अंकसे अवश्य दर्शाया जाता है। अर्थात् सामवेदके मंत्रोंपरके अंक ऋग्वेदके स्वरके बोधक हैं, और ये अंक गायनके आलापके दर्शक नहीं हैं।

जो लोग सामवेद मंत्र बोलते समय 'आ आ आ' करके आलाप करते हैं, वह गलत उच्चारण है। सामवेदके मंत्रके स्वर ऋग्वेदके ही स्वर हैं अतः उनका उच्चारण ऋग्वेदके मंत्रके समान ही करना चाहिये। सामवेदमें जो मंत्र हैं, वे ऋग्वेदसे ही लिये हैं। ये गान बनानेके लिये हैं। इनको 'योनि-मंत्र' कहते हैं। सामगायन इनसे होता है इसलिये 'सामगानकी यह योनि है'। सामगान इनसे बनता है जो गाया जाता हैं। पूर्व स्थानमें जो ऋग्वेदका मंत्र दिया है और वही सामवेदमें है ऐसा भी दर्शाया है उस मंत्रके गान इस तरह बने हैं—

(१) गोतमस्य पर्कम्।

ओग्नाई। आयाहीऽ ३। वोइतोयाऽ२इ। तोयाऽ२ इ। गृणानो ह। व्यदातयाऽ २ इ। तो या ऽ २ इ। नाइ होतासाऽ २३। त्साऽ २ इ। वाऽ२३४ औहोवा। हीऽ२३४षी॥१

(२) कश्यपस्य बार्हिषम्।

अग्न आयाही वी। तया इ। गृणानो हव्यदाताऽ२३ याइ। नि होता सत्सि बर्हाऽ२३ इषी। बर्हाऽ२ इषाऽ२३४ औहोवा। बर्हीऽ३ षीऽ २ ३ ४ ५॥ २॥

(३) गोतमस्य पर्कम्।

अग्न आयाहि। वाऽ५ इतयाइ। गृणानो हव्यदाऽ१ ताऽ३ ये। नि होताऽ२३४ सा। त्साऽ २३४ इषाऽ३। हाऽ२३४ इषोऽ६ हाइ॥३॥

इस तरह जो ऋग्वेदका मंत्र सामवेदमें लिया गया, उस एक ही ऋग्वेद मंत्रके ३ सामगान बने। इन तीन सामगानोंमें गोतमके बनाये दो सामगान हैं और कश्यपका बनाया एक है। इसलिये कहा है कि—

ऋचि अध्यूढं साम गीयते। छां० उ० १।६।१

ऋचा पर आश्रित सामगायन होता है। इसी बातको विवाह प्रकरणका एक मंत्र कहता है—

अमोऽहमस्मि सा त्वं, सामाहमस्मि ऋक्त्वं, द्यौरहं पृथिवी त्वं, ताविह संभवाव, प्रजामाजनयावहै॥ अथर्व० १४।२।७१; ऐतरेय ब्रा. ८।२७;
बृ. उ. ६।४।२०

विवाहके समय पति पत्नीको कहता है कि "(अमः अहं अस्मि) स्वरका आलाप मैं हूं और (सा त्वं) वह ऋचा तू स्त्री है। सामगानका आलाप मैं हूं और ऋचा तू है।

द्यु मैं हूं और पृथिवी तू है, हम दोनों यहां मिलजुलकर रहें और प्रजाको उत्पन्न करें।"

यहां 'सा+अम' (साम) को विवाहित दंपती माना है। (सा) ऋचा रूपी उपवर कन्याके साथ (अम) आलाप स्वरका विवाह हुआ और इस विवाहसे सुन्दर मनोहारि गान उत्पन्न हुआ। इस अथर्ववेद मंत्रका भी, अथर्व ऋचाका भी गान होता है ऐसा यहां माना है। ऋचा वह है जो चरणवाला मंत्र है, वह आलापके साथ गाया जाता है, उस गानका नाम साम है। अर्थात् जो आज 'सामवेद' नामसे सुप्रसिद्ध वेद है वह सामगानोंके योनि-मंत्रोंका वेद है। वास्तवमें वह (सा+अमः) सामवेद नहीं है, क्योंकि वह केवल "सा" (ऋचा) ओंका संग्रह ही है। उन ऋचाओंके साथ "अम" स्वरका आलाप मिला ही नहीं है। इस कारण यह सत्य रीतिसे सामवेद नहीं है। वह ऋग्वेदके मंत्रोंका संग्रह मात्र है।

यहां यह भी समझना योग्य है कि सामवेदकी १३ शाखाएं सामतर्पणमें लिखी हैं-"राणायन-शाट्यमुग्र्य-व्यास-भागुरि-औलुण्डी-गौल्गुलवी-भानुमानौ-पमन्यव- काराटि- मशकगार्ग्य- वार्षगण्य- कुथुम- शालीहोत्र-जैमिनी" इन तेरह सामवेदकी शाखाओंके नाम सामतर्पणमें लिखे हैं। इनमें "राणायनी, कौथुमी (कुथुम शाखावाली) और जैमिनी" इन शाखाओंकी सामवेद संहिताएं इस समय हमारे पास हैं। और प्रत्येक साम संहितामें मन्त्रक्रमकी भिन्नता है। तथा मंत्रसंख्या भी न्यूनाधिक है। मंत्रोंसे बने गान भी विभिन्न हैं।

हमारे पास कौथुमी तथा जैमिनी शाखाके गान लिखे हैं, कौथुमी शाखाके ऊह, ऊह्य, ग्रामगेय ऐसे थोडे गान हमने छापे भी हैं। बाकीके छापने हैं। दोनों शाखाओंके मिलकर करीब ८००० गान हैं। राणायनी शाखाके गान हमें अभीतक प्राप्त नहीं हुए। पर कौथुमी और जैमिनी शाखाके गान भी सबके सब ८००० ठीक तरह छापना बहुत व्ययका कार्य है। प्रत्येक शाखाकी गानपद्धति विभिन्न है और स्वर तथा आलापकी पद्धति विभिन्न होनेसे ये इतने गान हुए हैं। सच्चा 'सामवेद' (सा+अम+वेद) ऋचाओंके स्वर आलापोंका वेद यही है। जो प्रसिद्ध 'सामवेद संहिता' करके है वह केवल ऋग्वेदके मंत्रोंका संग्रह मात्र है। उसमें गानका संबंध बिलकुल नहीं है।

ऋग्वेदके तथा अथर्ववेदके सब चरणबद्ध मंत्रोंका गान हो सकता है। और गान करनेवाले विद्वान गोकर्णमें इस समय हैं भी। इसलिये ये साम सहस्रों हो सकते हैं चारों वेदोंमें चरणवाले मंत्र १७००० से कुछ अधिक हैं। एक एक मंत्रके तीन सामगान भी हुए तो भी ५० हजार साम हो सकते हैं। इसलिये कहते हैं कि सामगानोंका अन्त नहीं है। ये तो अनन्त हो सकते हैं। 'सहस्रवर्त्मा सामवेदः' सामवेदके गानोंके सहस्रों मार्ग हैं ऐसा इसीलिये कहा है।

श्रीमद्भगवद्गीतामें 'वेदानां सामवेदोऽस्मि।' (भ. गी. १०।२२) वेदोंमें सामवेद ईश्वरकी विभूति कही है वह इसीलिये है। महाभारतमें अनुशासन पर्वमें (१४।३१७) 'सामवेदश्च वेदानां।' इस तरह सब वेदोंमें सामका महत्त्व वर्णन किया है। इसकी विशेषता इस तरह दर्शायी है—

वाच ऋग्रसः, ऋचः साम रसः, साम्न उद्गीथो रसः। छां० उ० १।१।२

'वाणीका रस ऋग्वेद है, ऋग्वेदका रस सामगान है, सामगानका रस उद्गीथ गान है।' तथा—

सामवेद एव पुष्पम्। छां० उ० ३।३।१।

'सामवेद यह वेदरूपी वृक्षका फूल है।' जैसा वृक्षकी शोभा फूल बढाता है वैसा वेदकी शोभा सामगान बढाता है। और देखिये—

का साम्नो गतिरिति। स्वर इति होवाच।
छां० उ० १।८।४

तस्य हैतस्य साम्नो यः स्वं वेद, भवति हास्य स्वं, तस्य स्वर एव स्वम्। बृ० उ० १।३।२५

सामकी गति स्वरमें है। सामका (स्वं) सर्वस्व स्वर ही है। अर्थात् सामवेद ऋग्वेदके मंत्रोंका संग्रह है और उन मंत्रोंपर ऋषियोंने गान रचे हैं। इसलिये सब सामगान ऋषियोंके नामसे बोले जाते हैं। 'गौतमस्य पर्कं। कश्यपस्य बर्हिषं।' इत्यादि सामके नाम किस ऋषिने कौनसा गान रचा वह बता रहे हैं।

वेदमंत्रोंमें सामकी प्रशंसा

वेद मंत्रोंमें सामका उल्लेख अनेक प्रकार आया है वह अब देखिये—

अङ्गिरसां सामभिः स्तूयमानाः (देवाः)।
ऋ० १।१०७।२

अङ्गिरसो न सामभिः। ऋ० १०।७८।५

अंगिरसोंके सामगानका यह उल्लेख है। शकुनि पक्षीके स्वरके समान सामगान गाते हैं ऐसा कहा है—

उभे वाचौ वदति सामगा इव गायत्रं च त्रैष्टुभं चानुराजति। उद्गातेव शकुने साम गायसि; ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि॥ ऋ० २।४३।१-२

'गायत्र और त्रैष्टुभ' सामके नाम इस मंत्रमें हैं। शकुन पक्षी उद्गाताके समान साम गाता है। शकुन पक्षीके स्वरके समान साम गायन हो ऐसा इससे सूचित होता है। जो जागता है उसको साम प्राप्त होते हैं, ऐसा कहनेवाला मंत्र यह है—

यो जागार तमृचः कामयन्ते।
यो जागार तमु सामानि यन्ति॥ ऋ० ५।४४।१४

जो जागता है उसको ऋचाएं चाहती हैं, और जो जागता है उसको साम प्राप्त होते हैं। तथा—

तमेव ऋषिं तमु ब्रह्माणमाहुः
यज्ञन्यं सामगामुक्थशासम्। ऋ० १०।११०७।६

जो सामगान करता है उसको ऋषि, ब्रह्मा तथा यज्ञके लिये योग्य कहते हैं। तथा—

उपगासिषत् श्रवत्साम गीयमानम्। ऋ०८।८१।५
यूयमृषिमवथ सामविप्रम्। ऋ० ५।५४।१४

(सामविप्रं) सामगानमें जो कुशल गायक होता है उसका संरक्षण देव करते हैं। इन्द्रकी सामसे स्तुति करनेके विषयमें ऐसा कहा है—

इन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना। ऋ० ८।९५।७
इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्।
ऋ० ८।९८।१; अथर्व० २०।६२।५

बृहस्पतिः सामभिः ऋको अर्चतु। ऋ० १०।३६।५
अर्चन्त एके महि साम मन्वत। ऋ० ८।२९।१०

इन्द्रकी शुद्ध सामसे स्तुति करते हैं। बडे इन्द्रकी साम गाकर प्रशंसा करते हैं। सामोंसे अर्चना की जाती है। सामोंके अनेक नाम भी वेदमंत्रोंमें आये हैं देखिये—

आंगूष्यं शवसानाय साम। ऋ० १।६२।२
गायत्रेण प्रति मिमीते अर्कं अर्केण साम त्रैष्टुभेन वाकम्। ऋ० १।१६४।२४; अथर्व. ९।१०।२
साम कृण्वन् सामन्यो विपश्चित् क्रन्दन्नेति।
ऋ० ९।९६।२२

'आंगूष्य, अर्क, गायत्र ये सामके नाम इन मंत्रोंमें आये हैं। (सामन्यः विपश्चित्) साम गायन करनेवाला ज्ञानी विद्वान् (साम क्रन्दन् एति) सामके आलाप जोरसे गाता हुआ आता है। यहां सामगान बडे स्वरसे करनेका उल्लेख है। सामगानमें प्रवीण बडे आवाजसे साम गाते हैं।

सामका वर्णन अन्य रीतिसे भी वेदमें हुआ है। देखिये-

ऋचं साम यजामहे। अथर्व० ७।५४।१
षडु सामानि षडहं वहान्ति। अथर्व० ८।९।१६
ऋक्सांशितः सामतेजाः। अथर्व० १०।५।३०
सामानि यस्य लोमानि। अथर्व० ९।६।२; १०।७।२०
ऋचः साम यजुर्मही। अथर्व० १०।७।१४
साम्ना ये साम संविदुः। अथर्व० १०।८।४१
ऋक्साम यजुः उच्छिष्टे उद्गीतः प्रस्तुतं स्तुतम्। उच्छिष्टे स्वरः साम्नो मेडिश्च॥ अथर्व० ११।७।५
शरीरं ब्रह्म प्राविशत् ऋचः सामाथो यजुः।
अथर्व० ११।८।२३
ब्रह्माणो यस्यामर्चन्ति ऋग्भिः साम्ना यजुर्विदः।
अथर्व० १२।१।३८
ऋचां च वै स साम्नां च ब्रह्मणश्च प्रियं धाम भवति। अथर्व० १५।६।९

"ऋचा और सामसे यज्ञ होता है। छः साम हैं। सामसे तेजस्वी होता है। परमात्माके लोम सामगान है। ऋचा, साम और यजु ये तीन वेदमंत्र हैं। ऋचा, साम, यजु, सामका स्वर और आलाप परमात्मामें हैं। शरीरमें ब्रह्म प्रविष्ट हुआ है वह ऋचा साम तथा यजुरूपसे प्रकट है। यजु जाननेवाले ऋचाओंसे और सामसे अर्चना करते हैं। ऋचाओंका तथा सामोंका वह प्रिय धाम होता है।"

इस तरह ऋचा, साम और यजुका परस्पर संबंध वेद मंत्रोंमें बताया है। वेदोंमें निम्नलिखित सामगानोंके नाम आये हैं। बैरूपं, बृहत्, गौरिवीति, रैवतं, अर्कं, गायत्रं, श्लोकं, भद्रं इत्यादि नाम ऋग्वेदमें है। वाजसनेयी यजुर्वेदमें रथन्तरं (य. १०।१०), बृहत् (१०।११), बैरूपं (य. १०।१२), बैराजं (१०।१३), बैखानसं, वामदेव्यं, यज्ञायज्ञियं (वा० य० १२।४), शाक्करं रैवतं (य० १०।४), गायत्रं, गौरिवीतं, अभीवर्तं, क्रौशं, सत्यस्यार्धि, प्रजापतेर्हृदयं, श्लोकं, अनुश्लोकं, भद्रं, राजत्, अक्यं, इलान्दं इत्यादि नाम यजुर्वेदके हैं। प्रायः यजुर्वेदके सभी संहिताओंमें ये नाम हैं।

ऐतरेय ब्राह्मणमें—'बृहत्, रथन्तर, बैरूपं, बैराजं, शाक्करं, रैवतं, गायत्रं, रैवतं, नौधसं, रौरवं, यौधाजयं, आग्निष्टोमीयं, भास, विकर्ण इत्यादि नाम आये हैं। इस तरह चारों वेदोंमें और अनेक ब्राह्मण ग्रन्थोंमें सामगानोंके नाम आये हैं। इनमें कई नाम छंदोंसे बने हैं, कई मधुर स्वरसे हैं।

ऋचा पादवाले, चरणवाले मंत्रका नाम है। इसी पादबद्ध मंत्रका गान होता है, जिसका नाम साम है। शेष गद्य मंत्रका नाम यजु है। वेदमंत्रोंमें, पूर्व स्थानमें दिये या न दिये मंत्रोंमें, जो साम शब्द आया है वह सामगानका वाचक है। सामवेद नामक मंत्र संग्रहका वाचक वह नहीं है। सामवेदमें संग्रहित योनिमंत्रोंसे भिन्न अन्य पादबद्ध मंत्र भी गाये जाते हैं और उनको भी 'साम' कहते हैं।

सामके विषयमें इतना कहना पर्याप्त है। इससे सामवेदके मंत्र ऋग्वेद मंत्र ही हैं यह सिद्ध हुआ है।

गानके लिये ऋग्वेदसे जो मंत्र संगृहित किये वही मंत्र संग्रह सामवेद करके प्रसिद्ध हुआ है। सामकी शाखाओंकी संहिताओंमें सामवेदके मंत्रोंका क्रम विभिन्न है, संख्या भी न्यूनाधिक है और उनसे बने सामगान भी विभिन्न हैं और अनेक हैं।

सामवेद मंत्रसंग्रह

सामवेद मंत्रसंग्रह पूर्वार्धमें 'आग्नेय काण्ड' (मंत्रसंख्या ११४), 'ऐन्द्र काण्ड (मंत्रसंख्या ३५२), पावमान काण्ड (सोमकाण्ड, मंत्रसंख्या ११९) आरण्यक काण्ड मंत्र५५, महानाम्नि मंत्र १० मिलकर ६५० मंत्र हैं। अग्नि, इन्द्र और सोम इन तीन देवताओंके ये तीन विभाग हैं। अतः इसको 'दैवत संहिता' हम कह सकते हैं।

उत्तरार्चिकमें करीब १२२५ मंत्रोंका संग्रह है। पर यह संग्रह देवतानुसार नहीं है।

राणायनीय तथा जैमिनीय सामवेद संहिताओंमें मंत्रसंख्या कुछ न्यूनाधिक है।

अथर्ववेदके विषयमें

अथर्ववेदके विषयमें अब विचार करते हैं। अथर्ववेद संहिताके दो प्रवाह आज मिलते हैं। एक पिप्पलाद अथर्ववेद और दूसरा शौनकीय अथर्ववेद। पतंजली महामुनिने अपने व्याकरण महाभाष्यके प्रारंभमें 'शं नो देवी' मंत्रसे अथर्ववेदका प्रारंभ लिखा है। वह पिप्पलाद शाखाका प्रतीत होता है क्योंकि शौनकीय अथर्ववेदका प्रारंभ 'ये त्रिषप्ता' मंत्रसे हुआ है।

अथर्ववेदकी काण्डगणना

अथर्ववेदकी काण्ड गणना प्रारंभमें विषयानुसार नहीं है केवल सूक्तमें मंत्र संख्यानुसार हुई है, देखिये—

१ प्रथम काण्ड

४ मंत्रवाले सूक्त	३०	मंत्र संख्या	१२०		
५ ,,	,,	१	,,	५	
६ ,,	,,	२	,,	१२	
७ ,,	,,	१	,,	७	
९ ,,	,,	१	,,	९	
		३५		१५३	

इस प्रथम काण्डकी प्रकृति ४ मंत्रोंके सूक्तोंकी है।

२ द्वितीय काण्ड

५ ,,	,,	२२	,,	११०	
६ ,,	,,	५	,,	३०	
७ ,,	,,	५	,,	३५	
८ ,,	,,	४	,,	३२	
		३६		२०७	

इस द्वितीयकाण्डकी प्रकृति ५ मंत्रोंके सूक्तोंकी है।

३ तृतीय काण्ड

६	मंत्रवाले	सूक्त	१३	मंत्रसंख्या	७८
७	,,	,,	६	,,	४२
८	,,	,,	६	,,	४८
९	,,	,,	२	,,	१८
१०	,,	,,	२	,,	२०
११	,,	,,	१	,,	११
१३	,,	,,	१	,,	१३
			३१		२३०

इस तृतीय काण्डकी प्रकृति ६ मंत्रोंके सूक्तोंकी है।

४ चतुर्थ काण्ड

७	,,	,,	२१	,,	१४७
८	,,	,,	१०	,,	८०
९	,,	,,	३	,,	२७
१०	,,	,,	३	,,	३०
१२	,,	,,	२	,,	२४
१६	,,	,,	१	,,	१६
			४०		३२४

इस चतुर्थ काण्डकी प्रकृति ७ मंत्रोंके सूक्तोंकी है।

५ पञ्चम काण्ड

८	,,	,,	२	,,	१६
९	,,	,,	४	,,	३६
१०	,,	,,	२	,,	२०
११	,,	,,	६	,,	६६
१२	,,	,,	५	,,	६०
१३	,,	,,	३	,,	३९
१४	,,	,,	३	,,	४२
१५	,,	,,	३	,,	४५
१७	,,	,,	२	,,	३४
१८	,,	,,	१	,,	१८
			३१		३७६

इस पञ्चम काण्डकी कोई विशेष सूक्त संख्याविषयक प्रकृति नहीं है।

६ षष्ठ काण्ड

३	,,	,,	१२२	,,	३६६
४	,,	,,	१२	,,	४८
५	,,	,,	८	,,	४०
			१४२		४५४

इस षष्ठ काण्डकी प्रकृति ३ मंत्रोंके सूक्तोंकी है।

७ सप्तम काण्ड

१	,,	,,	५८	,,	५८
२	,,	,,	२७	,,	५४
३	,,	,,	१०	,,	३०
४	,,	,,	१०	,,	४०
५	,,	,,	३	,,	१५
६	,,	,,	४	,,	२४
७	,,	,,	३	,,	२१
८	,,	,,	३	,,	२४
९	,,	,,	१	,,	९
११	,,	,,	१	,,	११
			१२०		२८६

इस सप्तम काण्डकी प्रकृति १ तथा २ मंत्रोंके सूक्तोंकी है। सात काण्डतक मंत्रसंख्या २०३० होती है। सात काण्डतक ही विशेष मंत्र संख्यावाले सूक्तोंके अनुसार काण्डोंकी रचना हुई है। यह संग्रह विषयवार नहीं है और ना ही ऋषिवार वा देवतावार है। केवल सूक्तमें मन्त्रसंख्या कितनी है उसको देखकर यह संग्रह हुआ है। इसके आगेके काण्ड कुछ अंशमें विषयानुसार या प्रकरणानुसार हैं, ऐसा कह सकते हैं, देखिये—

	मंत्र संख्या	विषय
१ से ७ काण्डतक	२०३०	
८ अष्टम काण्ड	९९३	दीर्घायु। शत्रुनाश। औषधि। विराट्।
९ नवम ,,	३१३	मधु। काम। शाला। वृक्ष। अज। गौ। अतिथिसत्कार। आत्मा। यक्ष्मनाश।
१० दशम ,,	३५०	कृत्यानाश। ब्रह्म। सर्पविषनाश। विजय। गौ।
११ एकादश ,,	३१३	ब्रह्मौदन। रुद्र। प्राण। ब्रह्मचर्य। ब्रह्म। अध्यात्म। शत्रुनिवारण।
१२ द्वादश ,,	३०४	मातृभूमि। अग्नि। ओदन। गौ।
१३ त्रयोदश ,,	१८८	अध्यात्म
१४ चतुर्दश ,,	१३२	विवाह
१५ पञ्चदश ,,	१३०	अध्यात्म। व्रात्य
१६ षोडश ,,	१०३	दुःखनाश। विजय प्राप्ति

१७ सप्तदश	,,	३०	अभ्युदय प्रार्थना
१८ अष्टादश	,,	२८३	पितृमेध
१९ एकोनविंशति	,,	४५३	(फुटकर अनेक विषय)
२० विंश	,,	९५८	,, ,, ,,
		५९८७	अथर्ववेदकी कुल मन्त्रसंख्या

अष्टम काण्डसे १८ वे काण्डतक कुछ अंशमें प्रकरण दीखते हैं। परन्तु १९ वे और २० वे काण्ड फिर फुटकर हैं। और त्रयोदश, चतुर्दश तथा अष्टादश काण्डमें जैसे स्पष्ट प्रकरण हैं वैसे अन्य काण्डोंमें नहीं हैं। पर थोडे प्रयत्नसे इनके प्रकरण बन सकते हैं। प्रथम सात कांडोंके सूक्त तो केवल संख्याकी दृष्टिसे एकत्रित हुए हैं—

७ सप्तम	काण्ड	१ तथा २	मन्त्रोंके	सूक्त बहुसंख्य हैं।
६ षष्ठ	,,	३	,,	,,
१ प्रथम	,,	४	,,	,,
२ द्वितीय	,,	५	,,	,,
३ तृतीय	,,	६	,,	,,
४ चतुर्थ	,,	७	,,	,,

इस तरह यह गणना सूक्तमें मन्त्रसंख्याके अनुसार है। विषयवार नहीं, देवतावार नहीं और ऋषि अनुसार भी नहीं है। अठारहवें काण्डमें अन्त्येष्टी संस्कारके मन्त्र तथा पितृमेधके मन्त्र हैं। अथर्ववेदकी पिप्पलाद संहिता यहीं समाप्त होती है। अगले दोनों काण्ड पिप्पलाद संहितामें नहीं है। इस कारण कई समझते हैं कि यहां अथर्ववेद संहिता समाप्त होती है। उन्नीसवां तथा बीसवां ये दो काण्ड पीछेसे संग्रहित हुए हैं ऐसा इस कारण कई मानते हैं। बीसवे काण्डमें प्रायः ऋग्वेदके ही मन्त्र हैं और उन्नीसवें काण्डमें बहुत सूक्त ऐसे हैं कि जो बडे मननीय हैं। इस कारण हम बीस काण्ड तकके संग्रहको ही अथर्ववेदमें संमिलित मानते हैं। अन्तिम दोनों काण्ड शौनकके पूर्व ही इसमें संमिलित हुए हैं। जो शौनकाचार्यने स्वीकारे हैं उनपर हमारा आक्षेप होना योग्य नहीं है। शौनकाचार्यके स्वीकृत होनेके कारण इस अथर्ववेदमें २० काण्ड और ५९८७ मन्त्र मानना सयुक्तिक है।

अथर्ववेदके नाम

अथर्ववेदके (१) अथर्ववेद, (२) ब्रह्मवेद, (३) आंगिरसवेद, (४) भिषग्वेद और (५) क्षत्रवेद ये नाम प्रसिद्ध हैं। पहिले तीन नाम तो अत्यंत प्रसिद्ध हैं। ये पहिले तीनों नाम ऋषियोंके नाम हैं यह विशेष रीतिसे यहां समझना आवश्यक है। अन्तिम दो नाम विषयके अनुसार हैं।

१ अथर्वा	ऋषिके	मंत्र	१७६८ हैं
२ ब्रह्मा	,,	,,	९६७ ,,
३ अंगिरा	,,	,,	६७० ,,

अंगिराको भृग्वंगिरा भी कहा जाता है। अन्य ऋषियोंके मंत्र संख्यामें कम हैं। जिस ऋषिके मंत्र इस वेदमें संख्यामें अधिक हैं उस ऋषिका नाम इस वेदको दिया है और इस कारण 'अथर्ववेद, ब्रह्मवेद अथवा अंगिरावेद' ये नाम इस वेदको मिले हैं।

व्युत्पत्ति करके हम इन नामोंका अर्थ अथर्ववेदके अनुकूल बता सकते हैं। जैसा पूर्व आचार्योंने किया भी है जैसा—

अथर्वाणोऽथर्वणवन्तः । थर्वतिश्चरतिकर्मा तत्प्रतिषेधः ॥ निरु. दै. ११।२।१७

'थर्वका अर्थ गति है, वह जहां नहीं वह अथर्वा है।' अर्थात् निश्चलता, चित्तवृत्तिका निरोध करनेसे जो मानसिक शान्ति प्राप्त होती है वह अ-थर्व पदसे सूचित होती है। तथा—

अथ अर्वाग् एनं... अन्विच्छेति । तद्यदब्रवीदथार्वाङेनमेतास्वेवाप्स्वन्विच्छेति तदर्थोऽभवत्।

गोपथ ब्रा. १।४

'अपने समीप इसकी खोज करो (अथ अर्वाक्) अब पास इसकी खोज करो ऐसा कहनेसे अथर्वा हुआ है।' यह अथर्वाकी व्युत्पत्ति गोपथ ब्राह्मणने दी है। (अथ) अब (अर्वाक्) पास अपनेमें खोज कर यह इसका अर्थ है। बाहर आत्माकी खोज न करते हुए अपनेमें देखो।

अथर्ववेदमें इस विषयके मंत्र भी हैं देखिये—

मूर्धानमस्य संसीव्य, अथर्वा हृदयं च यत्।
मस्तिष्कादूर्ध्वः प्रैरयत् पवमानोऽधि शीर्षतः॥२६
तद् वा अथर्वणः शिरः देवकोशः समुब्जितः।
तत् प्राणो अभिरक्षति शिरो अन्नमथो मनः॥२७॥
ऊर्ध्वोऽनुसृष्टास्तिर्यङनुसृष्टाः
सर्वा दिशः पुरुष आ बभूवाँ।
पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते॥ २८॥

अथर्व. १०।२।२६-२८

*

'सिर और हृदयको अथर्वा सीता है और मस्तकके ऊपर प्राणको चलाता है। यह अथर्वाका सिर देवोंका कोश है। प्राण इस सिर मन और अन्नकी रक्षा करता है। ऊपर तिरछा सब ओर यह पुरुष ही है। यह ब्रह्मकी नगरी है, इसमें रहनेके कारण इसको पुरुष कहते हैं।'

इस तरह अथर्वाका वर्णन इसी अथर्ववेदमें है। इस आत्माको अपने अन्दर खोजकर अपने अन्दर देखनेका यह विषय इस रीतिसे इस वेदमें है। इस कारण इस व्युत्पत्तिसे जो अर्थ प्रकट होता है वह अर्थ इस अथर्ववेदमें है इसमें संदेह नहीं है।

ब्रह्मवेद

ब्रह्मवेदका अर्थ ब्रह्मका ज्ञान देनेवाला वेद। इस अथर्ववेदमें स्पष्ट शब्दोंसे ब्रह्मका ज्ञान बताया है इस विषयके प्रमाण मंत्र अब देखिये—

न वै तं चक्षुर्जहाति न प्राणो जरसः पुरा।
पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते ॥३०॥
अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः ॥३१॥
तस्मिन् हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते।
तस्मिन् यद् यक्षं आत्मन्वत् तद् वै ब्रह्मविदो
विदुः ॥ ३२ ॥ अथर्व. १०।२

'जो इस ब्रह्मकी नगरीको जानता है, उसके आंख और प्राण वृद्ध अवस्थाके पूर्व उसको नहीं छोडते। आठचक्र और नौ द्वार इस देवनगरी अयोध्याके हैं और इसके मध्यमें तेजसे आवृत्त सुवर्णका कोश है। इस सुवर्णमय कोशमें जो पूजनीय आत्मदेव है उसको ब्रह्मज्ञानी जानते हैं।'

यह ब्रह्मका ज्ञान इस वेदमें होनेसे इसका नाम ब्रह्मवेद सार्थ है। गोपथ ब्राह्मणमें भी ऐसा ही कहा है—

श्रेष्ठो हि वेदः, तपसोऽधिजातो ब्रह्मज्ञानां हृदये
संबभूव ॥ गोपथ ब्रा० १।९

'यह अथर्ववेद श्रेष्ठ वेद है, तपसे यह ब्रह्मज्ञानीयोंके हृदयमें प्रकट हुआ है।' इस कारण इसको 'ब्रह्मवेद' नाम सार्थ है।

आंगिरसवेद। भिषग्वेद।

इस अथर्ववेदको 'आंगिरसवेद' तथा 'भृग्वंगिरोवेद' तथा 'भिषग्वेद' भी कहते हैं। इस विषयमें गोपथ ब्राह्मणका वचन देखने योग्य है—

एतद् वै भूयिष्ठं ब्रह्म यद् भृग्वंगिरसः।
योऽगिरसः स रसः। ये अथर्वाणस्तद् भेषजम्।
यद् भेषजं तदमृतं। यदमृतं तद् ब्रह्म।
गोपथ ब्रा० ३।४

'भृग्वंगिरसोंका जो ब्रह्मज्ञान है वह बडा महत्त्वपूर्ण ज्ञान है। जो अंगरस है वह एक रस ही है। जो अथर्वा है वह औषध है। जो औषध है वह अमृत अर्थात् मृत्युसे बचानेवाला है और जो मृत्युसे बचाता है वही ब्रह्म है।' इस तरहका वर्णन गोपथमें दिया है, वह 'भृग्वंगिरावेद, अंगिरावेद, भिषग्वेद और ब्रह्मवेद' इन नामोंकी संगति बता रहा है।

आंगिरसका स्वरूप

आंगिरसका स्वरूप उपनिषदोंमें इस तरह समझाया है—

आंगिरसं मन्यन्ते, अङ्गानां हि यद् रसः।
छां० १।२।१०

आंगिरसोऽङ्गानाँ हि रसः। बृ० १।३।८
प्राणो हि अंगानां रसः। बृ० १।३।१९

'आंगिरसका अर्थ अंगोंका रस है। प्राण ही अंगोंका रस है।' शरीरमें एक प्रकारका जीवन रस रहता है, उसको अंगरस कहते हैं। इस अंगरसकी जो विद्या है उसका नाम आंगिरसी विद्या है, यही 'आंगिरस वेद' है। इस विषयमें निम्नस्थानमें लिखित मंत्र देखने योग्य है—

आथर्वणीः आंगिरसीः दैवीः मनुष्यजा उत।
ओषधयः प्रजायन्ते यदा त्वं प्राण जिन्वसि ॥
अथर्व. ११।४।१६

'आथर्वणी, आंगिरसी, दैवी तथा मनुष्यजा औषधि-चिकित्सा तब यशस्वी सिद्ध होती है जब प्राण शरीरमें रहना चाहता है।' यहां आथर्वणी, आंगिरसी, दैवी तथा मानवी चिकित्साओंका वर्णन है। अथर्वाके मंत्रोंमें वर्णित चिकित्सा आथर्वणी चिकित्सा होगी, अंगीयरससे जो चिकित्सा की जाती है, वह करनेवाले आंगिरस ऋषि कहलाते हैं। दैवी चिकित्सा वह है कि जो अग्नि, जल, सूर्य, विद्युत, औषधि आदिसे होती है। मनुष्यज चिकित्सा जो मानवोंद्वारा विविध साधनोंसे होती है। यहां इस मंत्रमें चार चिकित्साओंका उल्लेख है। अथर्ववेदके नामोंके विषयमें निम्न स्थानमें दिये वचन मननीय हैं—

१ 'अथर्ववेद' यह नाम गोपथ ब्राह्मणमें दिया है। 'शं नो देवीरभिष्टय' इत्यारभ्य 'अथर्ववेदं अधीयते।' (गो. ब्रा. १।२९) यहां अथर्ववेद नाम आया है।

२ 'ब्रह्मवेद' यह नाम 'तं ऋचः सामानि यजूंषि ब्रह्म च अनुव्यचलन्। (अथर्व. १५।६।८) इसमें 'ब्रह्म' नाम अथर्ववेदके लिये आया है।

३ शतपथमें 'ता उपदिशति अङ्गिरसो वेद' (श. ब्रा. १३।४।३।८) 'अङ्गिरसवेद' यह नाम अथर्ववेदके लिये आया है।

४ 'सामानि यस्य लोमानि अथर्वाङ्गिरसो मुखं' (अथर्व १०।७।२०) यहां 'अथर्वांगिरसो' वेदपद अथर्ववेदके लिये आया है।

५ 'एतद्वै भूयिष्ठं ब्रह्म यद् भृग्वंगिरसः।' (गो. ब्रा.३।४) इस गोपथ ब्राह्मणमें 'भृग्वंगिरस' पद अथर्ववेदके लिये आया है।

६ 'ऋच, ... यजुः... साम ... क्षत्रं ... वेद'। (श. ब्रा. ११।६।१४) इस शतपथ ब्राह्मणके वचनमें 'क्षत्र' पद अथर्ववेदका सूचक आया है।

७ 'ऋचः सामानि भेषजा यजूंषि होत्रा वूम।' (अथर्व. ११।६।१४) में 'भेषजा' पद अथर्ववेदका वाचक है।

अथर्व वेदमें चिकित्साएं हैं इसलिये 'भेषज्यवेद' नाम अथर्ववेदके लिये योग्य है। अथर्ववेदमें युद्ध विद्या है इस कारण 'क्षत्रवेद' यह नाम भी अथर्ववेदके लिये योग्य है। इस तरह अथर्ववेदके नाम हैं। ये सब अंशतः सार्थ हैं। अंशतः सार्थ कहनेका कारण यह है कि ये नाम अथर्व वेदके अंशके हैं, परंतु वे संपूर्णके लिये प्रयुक्त हुए हैं। अब हम देखेंगे कि अथर्ववेदमें सूक्तोंके विषय कैसे हैं।

सूक्तोंके विषय

१ प्रथम काण्ड- १ मेधाजनन, २ रोगोपशमन, ३ मूत्रमोचन, ४-६ आपः, ७-८ यातुधाननाशन, ९ विजय प्रार्थना, १० पाशविमोचन, ११ सुख प्रसूति, १२ यक्ष्मनाशन, १३ विद्युत्, १४ कुलपा कन्या, १५ पुष्टिकर्म, १६ शत्रुबाधन, १७ धमनी बंधन, १८ अलक्ष्मी नाशन, १९-२१ शत्रुनिवारण, २२ हृद्रोगकामिलानाशन, २३-२४ श्वेतकुष्ठनाशन, २५ ज्वरनाशन, २६ शर्मप्राप्ति, २७ स्वस्त्ययन, २८ रक्षोघ्न, २९ सपत्नीक्षयण, ३० दीर्घायु, ३१ पापमोचन, ३२ महद्ब्रह्म, ३३ आपः, ३४ मधुविद्या, ३५ दीर्घायु।

२ द्वितीय काण्ड- १ परमधाम, २ भुवनपति, ३ आस्रावभेषज, ४ दीर्घायु, ५ इन्द्र, ६ सपत्नहा, ७ शापमोचन, ८ क्षत्रियरोगनाशन, ९ दीर्घायु, १० पाशमोचन, ११ श्रेयःप्राप्ति, १२ शत्रुनाशन, १३ दीर्घायु, १४ दस्युनाशन, १५ अभयप्राप्ति, १६ सुरक्षा, १७ बलप्राप्ति, १८-२४ शत्रुनाशन, २५ पृश्निपर्णी, २६ पशु संवर्धन, २७ शत्रुपराजय, २८-२९ दीर्घायु, ३० मनः, ३१-३२ क्रिमिजम्भन, ३३ यक्ष्मनाशन, ३४ पशु, ३५ विश्वकर्मा, ३६ पतिवेदनम्।

३ तृतीय काण्ड— १-२ शत्रुसेना संमोहन, ३ स्वराज्ये राज्ञः पुनः स्थापनं, ४ प्रजाभी राज्ञः संवरणं, ५ राजा राजकृतश्च, ६ शत्रुनाशन, ७ यक्ष्मनाशन, ८ राष्ट्रधारण, ९ दुःखनाशन, १० रायस्पोषप्राप्तिः, ११ दीर्घायु, १२ शाला, १३ आपः, १४ गोष्ठः, १५ वाणिज्य, १६ स्वस्ति, १७ कृषि, १८ वनस्पति; १९ क्षत्रं, २० रयिसंवर्धन, २१ शान्ति, २२ वर्चः प्राप्ति, २३ वीरप्रसूति, २४ समृद्धि, २५ कामस्य इषुः, २६ आत्मरक्षा, २७ शत्रुनिवारण, २८ पशुपोषण, २९ अवि, ३० सांमनस्य, ३१ यक्ष्मनाशन।

४ चतुर्थ काण्ड— १ ब्रह्म, २ आत्मा, ३ शत्रुनाशन, ४ वाजीकरण, ५ स्वापन, ६-७ विषघ्न, ८ राज्याभिषेक, ९ आञ्जन, १० शंखमणि, ११ अनड्वान्, १२ रोहिणी, १३ रोगनिवारण, १४ स्वर्ज्योति, १५ वृष्टि, १६ सत्यानृतसमीक्षक, १७-१९ अपामार्ग, २० पिशाचक्षयण, २१ गावः, २२ अमित्रक्षय, २३-२९ पापमोचन, ३० राष्ट्री, ३१ सेना निरीक्षण, ३२ सेना संयोजन, ३३ पापनाशन, ३४ ब्रह्मौदन, ३५ मृत्युसंतरण, ३६ सत्यौजा अग्नि, ३७ क्रिमिनाशन, ३८ वृषभ, ३९ संनति, ४० शत्रुनाशन।

५ पंचम काण्ड— १ अमृतासु, २ भुवनज्येष्ठ, ३ विजय, ४ कुष्ठनाशन, ५ लाक्षा, ६ ब्रह्मविद्या, ७-८ शत्रुनाश, ९-१० आत्मा, ११ संपत्कर्म, १२ ऋतयज्ञ, १३ सर्पविषनाश, १४ कृत्यापरिहरण, १५ मधुला वनस्पति, रोगनाश, १६ वृषरोगनाश, १७ ब्रह्मजाया, १८-१९ ब्रह्मगवी, २०-२१ शत्रुसेनाव्रासन, २२ तक्मनाशन, २३ क्रिमिघ्न, २४ ब्रह्मकर्म, २५ गर्भाधान, २६ नवशाला, २७ अग्निः, २८ दीर्घायुः, २९ रक्षोघ्न, ६० दीर्घायु, ३१ कृत्यापरिहरण।

यहांतक हमने पांच काण्डोंके विषय सूक्तक्रमसे दिये हैं। देखते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि, ये सूक्त विषयानुसार नहीं हैं। यदि ये सब सूक्त विषयानुसार रखे जांयगे, तो इनका अध्ययन अत्यंत सहज हो सकेगा। विना कष्टके ये सूक्त समझमें आ सकते हैं।

विषयानुसार सूक्तसंग्रह

इस कारण विषयानुसार सूक्तोंका संग्रह करना चाहिये। पिप्पलाद संहिता तथा शौनक संहिता ये दो अथर्ववेदके प्रवाह हैं। दोनोंके अन्दर सूक्तोंमें थोडासा अन्तर है। इस लिये दोनोंके सूक्त विषयवार संग्रहित किये जांय तो वेदका अध्ययन सहज हो सकेगा। आत्मा, ब्रह्म, ईश्वर, राज्यशासन, युद्ध, सैन्यसंचालन, रोगचिकित्सा, औषधप्रयोग आदि जितने विषय हैं उतने विषयोंके नीचे सूक्तोंका संग्रह करनेसे वेदका अध्ययन सहज हो सकेगा, और थोडे समयमें भी हो सकेगा। ऊपर जो सूक्तोंके शीर्षक दिये हैं, उनको देखनेसे ऐसा विषयवार सूक्तसंग्रह करना कोई कठीन नहीं है, परंतु उपयोगकी दृष्टीसे आधिक लाभकारी है यह सहज ही ध्यानमें आ सकता है। ऊपर जो नाम अथर्ववेदके दिये हैं वे अथर्ववेदके मुख्य प्रकरण हैं ऐसा माना जा सकता है। 'क्षत्रवेद' में सेना युद्धशास्त्र आदि विषय आ जांयगे, 'भिषग्वेद' में औषधि, चिकित्सा आदि विषय आ जांयगे, इस तरह यह विषयवार सूक्तसंग्रह किया जाय तो ५ वर्षोंका अध्ययन एक दो वर्षोंमें सहज हो सकेगा। यह इस तरह अथर्ववेदका विचार हुआ अब हम ऋग्वेदका विचार करते हैं—

ऋग्वेदका विचार

ऋग्वेदकी (१) शाकल संहिता, (२) वाष्कल संहिता और (३) सांख्यायन संहिता ऐसी तीन संहिताएं इस समय उपलब्ध हैं। शाकल संहितामें यथा स्थान परिशिष्ट जोड देनेसे सांख्यायन संहिता होती है। बाष्कल संहिताका पाठ भी थोडी न्यूनाधिकतासे ऐसा ही है। ये पाठ हमने अपनी ऋग्वेद संहितामें दिये हैं।

ऋग्वेद संहिता दस मंडलोंमें विभक्त है। आठ अष्टकोंकी गणना भी दूसरी है। मण्डलोंकी गणना ऋषिवार है, केवल नवममण्डल सोमदेवताका है। बाकी नौ मण्डल ऋषिक्रमसे संहिता है। अष्टकोंकी गणनामें कुछ विशेष हेतु नहीं है। कुल संहिता ६४ अध्यायोंमें विभक्त करके आठ आठ अध्यायोंके आठ अष्टक बनाये हैं। न ऋषिवार यह गणना है और नाही देवतावार है।

मण्डलोंकी गणना इससे अच्छी है। नवम मण्डल केवल सोम देवताके मन्त्रोंका संग्रह करके बनाया है। बाकी सब नौ मण्डल ऋषिक्रमसे संग्रहित हुए हैं। इस कारण ये नौ मण्डल 'आर्षेय संहिता' कही जा सकती है और नवम मण्डलको हम 'दैवत संहिता' कह सकते हैं। यह ऋग्वेदको देखकर पाठकोंको पता लग सकता है कि 'आर्षेय संहिता' किस तरह बनानी चाहिये और 'दैवत संहिता' किस रीतिसे बनानी चाहिये। इस ऋग्वेदने इन दोनों प्रकारके संग्रह करके स्वयं बताया है कि ये दो संग्रह इस तरह होते हैं। और दोनों संग्रह लाभकारी है।

दैवत संहिताका आदर्श
सोम देवताका मंत्रसंग्रह

ऋग्वेदका नवम मण्डल "दैवत संहिता" का एक भाग है। सोम देवताके ११०८ मन्त्र इस मण्डलमें एकत्रित किये हैं। सब मन्त्रोंकी देवता 'पवमान सोम' है और एक एक ऋषिके मन्त्र क्रमशः संग्रहित हैं देखिये—

नवममण्डल (देवता पवमान सोम)- १ मधुच्छन्दा १०; २ मेधातिथि १०; ३ शुनःशेप १०; ४ हिरण्यस्तूप १०; ५-२४ असित १४४; २५ दृळहच्युत ६; २६ इध्मवाह ६; २७-२८ नृमेध ६; २९ प्रियमेध; ३० बिन्दु ६; ३१ गोतम ६; ३२ श्यावाश्व ६; ३३-३४ त्रित १२; ३५-३६ प्रभूवसु १२; ३७-३८ रहूगण १२; ३९-४० बृहन्मति १२; ४१-४३ मेध्यातिथि १८; ४४-४६ अयास्य १८; ४७-४९ कवि १८; ५०-५२ उचथ्य १५; ५३-६० अवत्सार ३२; ६१ अमहीयु ३०; ६२ जमदग्नि ३०; ६३ निध्रुवि ३०; ६४ कश्यप ३०; ६५ भृगु ३०; ६६ शतं वैखानसाः ३०; ६७ सप्त ऋषयः ३२; ६८ वत्सप्रि १०; ६९ हिरण्यस्तूप १०; ७० रेणु १०; ७१ ऋषभ ९; ७२ हरिमन्त ९; ७३ पवित्र ९; ७४ कक्षीवान् ९, ७५-७९ कवि २५; ८०-८२ वसु १५; ८३ पवित्र ५; ८४ वाच्य ५; ८५ वेन १२; ८६ अकृष्टा माषा, सिकता, अजा इ० ४८; ८७-८९ उशना २४; ९० वसिष्ठ ६; ९१-९२ कश्यप १२; ९३ नोधा ५; ९४

कण्व ५; ९५ प्रस्कण्व ५; ९६ प्रतर्दन २४; ९७ वसिष्ठो वासिष्ठाश्च ५८; ९८ अंबरीष १२; ९९-१०० रेभसूनू १७; १०१ अभ्रिगु आदयः १६; १०२ त्रित ८; १०३ द्वित ६; १०४-१०५ पर्वतनारदौ १२; १०६ अग्न्यादयः १४; १०७ सप्तर्षयः २६; १०८ गौरिवीति १६; १०९ अग्नयः २२; ११० त्र्यरुणः १२; १११ अनानत ३; ११२ शिशु ४; ११३-११४ कश्यप १५; (कुल ' पवमान सोम ' देवताकी मन्त्रसंख्या ११०८)

यह नवममण्डल ऋग्वेदका है । यह दैवत संहिता बनी बनायी है । इसी तरह अग्नि, इन्द्र आदि देवताओंके मन्त्र संग्रह हम तैयार कर सकते हैं । हमने ऐसी ही दैवत संहिता चारों वेदोंकी बनाई और मुद्रित भी की जो वेदप्रेमी जनताको बहुत ही पसंद आयी । इसीलिये उसकी दो सहस्र पुस्तकें हाथों हाथ बिक गयी । पुनः द्वितीयवार यह दैवत संहिता छापनी है ।

ऋग्वेदके शेष नौ मण्डल ' आर्षेय संहिता ' है । ऋषि क्रमसे जो मन्त्रसंग्रह होता है वह आर्षेय संहिता कहलाती है ।

आर्षेय संहिता

ऋग्वेदके १-८ तकके आठ मण्डल और दशममण्डल इन नौ मण्डलोंमें ऋषिक्रमसे मन्त्रसंग्रह कैसा है वह अब देखिये—

१ **प्रथम मण्डल**— १-१० मधुच्छन्दाः; ११ जेता; १२-२३ मेधातिथि; २४-३० शुनःशेप; ३१-३५ हिरण्यस्तूप; ३६-४३ कण्व, ४४-५० प्रस्कण्व; ५१-५७ सव्य, ५८-६४ नोधाः, ६५-७३ पराशर; ७४-९३ गोतम; ९४-९८ कुत्स; ९९ कश्यप; १०० ऋज्राश्व; १०१-११५ कुत्स; ११६-१२६ कक्षीवान्; १२७-१३९ परुच्छेप; १४०-१६४ दीर्घतमाः; १६५-१९१ अगस्त्य इतने ऋषियोंके २००६ मन्त्र प्रथम मण्डलमें हैं ।

२ **द्वितीय मण्डल**— १-४३ सूक्तोंमें गृत्समद ऋषिके ४२९ मन्त्र द्वितीय मण्डलमें है ।

३ **तृतीय मण्डल**— १-६२ सूक्तोंमें विश्वामित्र ऋषिके ६१७ मन्त्र इस तृतीय मण्डलमें हैं ।

४ **चतुर्थ मण्डल**— १-५८ सूक्तोंमें वामदेव ऋषिके ५८९ मन्त्र इस चतुर्थ मण्डलमें हैं ।

५ **पञ्चम मण्डल**— १-८७ सूक्तोंमें अत्रि तथा अत्रिगोत्रके ऋषियोंके ७२७ मन्त्र इस पञ्चम मण्डलमें है ।

६ **षष्ठ मण्डल**— १-७५ सूक्तोंमें भरद्वाजके तथा भरद्वाज गोत्रके ऋषियोंके ७६५ मन्त्र इस षष्ठ मण्डलमें हैं ।

७ **सप्तम मण्डल**— १-१०४ सूक्तोंमें वसिष्ठ ऋषिके ८४१ मन्त्र इस सप्तम मण्डलमें हैं ।

८ **अष्टम मण्डल**— १-१०३ कण्व गोत्रके अनेक ऋषियोंके तथा अत्रि आदि गोत्रोत्पन्न ऋषियोंके १७१६ मन्त्र हैं ।

९ **नवम मण्डल**— सोम देवताके मन्त्रोंका संग्रह है यह इससे पूर्व बताया ही है ।

१० **दशम मण्डल**में १९१ सूक्त हैं और अनेक गोत्रोंके अनेक ऋषियोंके १७५४ मन्त्र हैं ।

एक नवम मण्डल सोम देवताका है । शेष ९ मण्डल ऋषियोंके मण्डल हैं । अतः ऋग्वेद संहिता मुख्यतः आर्षेय संहिता है, ' केवल नवम मण्डल ही दैवत संहिता है ।

सामवेद संहिता ऋग्वेदसे मन्त्र लेकर तैयार हुई है । यह बात पूर्व स्थानमें बतायी ही है । इस सामवेद संहितामें पूर्वार्ध दैवत संहिता है, उत्तरार्ध वैसा नहीं है । सामवेद संहिता ऋग्वेदके मन्त्रोंका संग्रह होनेसे अर्थ जाननेके समय इसका पृथक् विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है । क्योंकि ऋग्वेदके मन्त्रोंके अर्थमें सामवेदके मन्त्रोंका अर्थ आ जाता है ।

अथर्ववेदके मन्त्रोंकी रचना सूक्तमें मन्त्रसंख्याकी दृष्टिसे प्रथम ७ काण्डोंमें है । इसके आगेके १८ वे काण्ड-तकके ११ काण्ड कुछ अंशमें विषयवार मन्त्र संग्रहसे बने हैं । फिर अन्तिम उन्नीस और वीस ये दो काण्ड वैसे नहीं हैं ।

दैवत संहितासे वेदाध्ययनकी सुविधा

यदि चारों संहिताओंके मन्त्र देवतानुसार संग्रहित किये गये, और उनके देवतानुसार प्रकरण बनाये गये, तो वेद-मन्त्रोंका अर्थ जाननेके लिये बडी सरलता हो सकती है । वेदका अध्ययन इस समय एक कठिन समस्यासी बनी है, उसमें इस रीतिसे सीधी गति हो सकती है । और दैवत संहिता कोई नयी चीज हम बनाते हैं ऐसी बात नहीं है,

परन्तु ऋग्वेदका नवम मण्डल, और सामवेद पूर्वार्ध ये दैवत संहिताएं ही हैं। इस आधारपर सब वेद-मन्त्रोंकी हम दैवत संहिता बना सकते हैं।

ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ये पद्यमय काव्य हैं। इनमें चरणबद्ध मन्त्र रचना है। इनके देवता निश्चित हैं। इसलिये इनका देवतानुसार मन्त्रसंग्रह बनाना कोई कठिन बात नहीं है और वैसा हमने बनाया भी था और मुद्रित भी किया था। अब उसको पुनः संशोधित रूपसे छापना है।

चारों वेदोंका सार्थ अध्ययन करनेके लिये ५।७ वर्ष लगते हैं। पर दैवत संहितानुसार चारों वेदोंका अध्ययन २।३ वर्षोंमें हो सकता है। आजकल लोगोंको अनेकानेक व्यवधान होनेसे समय कम मिलता है। इसलिये दैवत संहितामें जो विषय देखना हो वह झट देख सकते हैं और अपना कार्य कर सकते हैं। ऐसी अनेक सुविधाएं इस दैवत संहिताके प्रकरण बननेसे अनुभवमें आनेवाली हैं। इसलिये इस ओर विद्वान अधिक लक्ष्य दें ऐसी उनके सामने हमारी प्रार्थना है।

यहांतक ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद संहिताओंका विचार किया। ये तीनों वेद पद्यवेद हैं। इसलिये तीनोंका एकत्रीकरण करना सहज बात है। यजुर्वेदमें जो पद्य मंत्र हैं उनका समावेश पूर्वोक्त दैवत संहितामें हो सकता है। अब गद्य यजुर्वेदका विचार करना चाहिये।

यजुर्वेदका विचार

यजुर्वेदकी निम्नलिखित संहिताएं इस समय मिलती है-

१ वाजसनेयी यजुर्वेद संहिता
२ काण्व ,, ,,
३ मैत्रायणी ,, ,,
४ काठक ,, ,,
५ तैत्तिरीय ,, ,,
६ कपिष्ठलकठ ,, ,,

कपिष्ठलकठ यजुर्वेद संहिता संपूर्ण नहीं मिली, इस कारण छापी नहीं। शेष सब संहिताएं स्वाध्यायमण्डल द्वारा छप चुकी हैं।

वाजसनेयी और काण्व ये दो संहिताएं एक जैसी ही हैं। कुछ अध्यायोंमें तथा क्वचित् मंत्रोंमें विभिन्नता है। बाकी क्रम तथा प्रकरण एक जैसे हैं। काण्वसंहितावाले अपनेको 'आद्यशाखी' अथवा 'प्रथमशाखी' कहते हैं अर्थात् उनकी संमतिसे काण्वसंहिता दोनोंमें आदि संहिता है। वाजसनेयी शाखावाले कहते हैं कि सूर्यसे लाया वेद हमारा है। दोनों संहिताएं समान होनेसे इस विवादके होनेपर भी कोई विशेष मतभेदके लिये स्थान नहीं है।

कपिष्ठल कठ संहिता त्रुटित मिलनेके कारण उस विषयमें अधिक लिखना असंभव है मैत्रायणी और काठक ये संहिताएं पूर्वोक्त दोनों संहिताओंके समान ही प्रकरणबद्ध हैं।

तैत्तिरीय यजुर्वेद संहिताको "कृष्ण यजुर्वेद" कहते हैं। और वाजसनेयी तथा काण्वको "शुक्ल यजुर्वेद" कहते हैं। यह शुक्ल यजुर्वेद उत्तर भारत, गुजरात, हिमाचल, नासिक, आदि उत्तर महाराष्ट्रमें प्रचलित है। इनको माध्यंदिन शाखी कहते हैं। उपनयनमें इनकी संध्या मध्यदिनसे प्रारंभ होती है। इनमें यह परंपरा आज भी चालू है।

शुक्ल और कृष्ण यह भेद इस यजुर्वेदमें है। प्रथम जो संहिता प्रचलित थी वह कृष्ण यजुःसंहिता अर्थात् तैत्तिरीय संहिता थी। याज्ञवल्क्यका गुरुके साथ कुछ विवाद होनेके कारण याज्ञवल्क्यने इस यजुर्वेदका त्याग करके सूर्यसे शुक्ल-यजुर्वेद प्राप्त किया। यह कथा प्रसिद्ध है। इस कारण तैत्तिरीय संहिताको कृष्ण यजुर्वेद कहते हैं और वाजसनेयी संहिताको शुक्ल यजुर्वेद कहते हैं। कृष्ण यजुर्वेद दक्षिण भारतमें है और उत्तर भारतमें शुक्ल यजुर्वेद है।

कृष्ण यजुर्वेदकी जो संहिता आज मिलती है वह बिलकुल प्रकरणबद्ध नहीं है। पहिले प्रकरणका विषय अन्तिम प्रकरणमें और अन्तिम प्रकरणके मंत्र किसी और स्थानपर हैं। ऐसी गडबड किसी अन्य संहितामें नहीं है।

यह तैत्तिरीय संहिता प्रथम जिस समय यजुर्वेदके रूपमें थी वह मंत्रक्रम कुछ और था और तैत्तिरीय संहिताके रूपमें जिस समय यह संहिता एकत्रित हो गयी, उस समय जो क्रम आज दीखता है वह मंत्रक्रम शुरू हुआ। प्राचीन पाठ कैसा था, उसका निर्णय हम आज भी कर सकते हैं। ऐसा खोजपूर्वक निर्णय गोकर्ण निवासी वेदके प्रकाण्ड विद्वान पं. श्री. देवरात गजानन्द शर्माजीने किया है और मुद्रणके लिये लिखित पुस्तक भी तैयार करके लिखकर रखी है। यह कई वर्षोंके खोजका परिणाम है। आज इस पुस्तकको छापकर प्रसिद्ध होनेकी अत्यंत आवश्यकता है। पर इसका

मुद्रण व्यय १०००० दस हजार रु. होता है। वह कोई धनी देवे तो यह ग्रंथ जनताके सामने आ सकता है। शुद्ध प्रकरणबद्ध अवस्थामें यह यजुर्वेद जनताको प्राप्त हो सकता है। आज इसको तैयार होकर १०।१२ वर्ष हुए, परंतु अबतक मुद्रणके लिये आवश्यक धनका प्रबंध न हो सकनेके कारण यह ग्रंथ वैसा ही लेखरूपमें पडा है।

शेष यजुर्वेद प्रकरणबद्ध हैं इस कारण इनकी परस्पर तुलना की जा सकती है। वाजसनेयी यजुर्वेदमें क्रमशः ये प्रकरण है—

वाजसनेयी यजुर्वेदके प्रकरण

१ अध्याय — दर्शपूर्णमास यज्ञ
२ ,, — अग्न्याधान, पितृयज्ञ
३ ,, — अग्निहोत्र, उपस्थान
४ ,, — अग्निष्टोम यज्ञ
५ ,, — सोम प्रकरण
६ ,, — अग्निषोमीय प्रकरण
७ ,, — ग्रह प्रकरण
८ ,, — द्वादशाह याग, गवामयन
९ ,, — वाजपेय यज्ञ, राजसूय यज्ञ
१० ,, — सौत्रामणि
११ ,, — अग्निचयन
१२ ,, — उखाप्रकरण
१३ ,, — पुष्कर पर्णोपधान
१४ ,, — तृतीया चिति आदि
१५ ,, — पंचम चिति
१६ ,, — रुद्रदेवता
१७ ,, — चित्यपरिषेकादि
१८ ,, — वसोर्धारादि
१९ ,, — सौत्रामणि
२० ,, — ,,
२१ ,, — पुरोऽनुवाक याज्य
२२ ,, — अश्वमेध यज्ञ
२३ ,, — ,,
२४ ,, — ,,
२५ ,, — ,,
२६ ,, — ,,
२७ ,, — अग्निचयन
२८ ,, — सौत्रामणि परिशेष
२९ ,, — अश्वमेध ,,
३० ,, — पुरुषमेध
३१ ,, — ,,
३२ ,, — सर्वमेध
३३ ,, — पुरोरुक्
३४ ,, — ब्रह्मयज्ञ
३५ ,, — पितृमेध
३६ ,, — शान्ति
३७ ,, — प्रावर्ग्य, महावीर निर्माण
३८ ,, — घर्म
३९ ,, — ,,
४० ,, — आत्मोपनिषद्

यहां क्रमशः इस यजुर्वेदमें यज्ञ प्रकरण किस तरह हैं यह बताया है। काण्व संहितामें अध्यायसंख्यामें कुछ न्यूनाधिक है। अन्य संहिताओंमें भी ऐसा ही क्रम है। यह सब व्यवस्था यज्ञके लिये जैसी चाहिये वैसी की गयी है। अन्य सब वेदकी संहिताओंमें भी यज्ञके कर्मानुसार विभाग किये गये हैं। यज्ञकी दृष्टिसे यह व्यवस्था योग्य है। पर हम वेदमें अन्य व्यवस्थाएं जो हैं उनको भी देखना चाहते हैं। इस कारण हमें मंत्रोंके क्रममें बदल करना आवश्यक पड रहा है।

ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेदके मंत्रोंके देवता क्रमानुसार तथा जहां होंगे वहां विषयक्रमानुसार भी मंत्रोंका संग्रह करना अत्यंत आवश्यक है। वेदकी उपयोगिताकी दृष्टिसे ऐसा करना अत्यंत योग्य तथा आवश्यक भी है। यह तो पद्यमय तीनों वेदोंके मंत्रोंके वर्गीकरणके विषयमें हुआ। यजुर्वेदके मंत्रोंका विचार विशेष रीतिसे करना आवश्यक है।

यजुर्वेदमें ४० अध्याय, १९७५ कण्डिकाएं और ३९८८ मंत्र हैं। एक एक कंडिकामें कई मंत्र हैं और प्रत्येक मंत्रका विशेष महत्त्व है। इसलिये इन ३९८८ मंत्रोंके विषयवार प्रकरण बनाने चाहिये। इस समय यज्ञकर्मानुसार प्रकरण हैं वे यज्ञ करनेके समय उपयोगी हैं। अतः जो आजकी यज्ञ विषयक प्रकरण व्यवस्था है उसको वैसी ही रहने देना योग्य है। जो अश्वमेध, ज्योतिष्टोम आदि यज्ञ करेंगे उनके लिये वह व्यवस्था उपयोगी सिद्ध होगी।

पर हमने तो वेदसे जनताकी शिक्षा, व्यवहार, राज्य-शासन, शत्रुसे युद्धादि व्यवहार करने हैं, सेनारचना, शस्त्र निर्माण, अस्त्र प्रयोग, चिकित्सा आदि करना है। इस कारण इन व्यवहारोंमें हमें वेदका मार्गदर्शन हो इस हेतुसे इन विषयोंके अनुसार मंत्रसंग्रह करनेकी अब आवश्यकता है। वह विषयवार मंत्रसंग्रह बनाना हमें आवश्यक है। वैसा विषयवार मंत्र संग्रह बनाया जाय तो वेद दैनिक कार्यमें प्रयुक्त होता है ऐसा अनुभव पाठकोंको आजायगा और वेदका महत्त्व जनताके सामने प्रकट होगा। आज वेद है पर वह दैनिक कार्यमें प्रयुक्त नहीं है। एक तो सब वेद यज्ञ प्रकरणानुसार होनेसे व्यवहारकी दृष्टिसे उसका कोई उपयोग जनताके सामने नहीं जैसा हुआ है। और हरएक श्रेष्ठ मानवी व्यवहारका आदेश देनेवाले वेद होते हुए वे चारों ओरसे बंद होनेके समान बने हैं। ये यजुर्वेदके मंत्रभाग दैनिक व्यवहार-में कैसे उपयोगी हैं देखिये। इसके उदाहरण हम देते हैं-

यजुर्वेदके सुभाषित

१ आप्यायध्वं (वा. यजु. १।१)- बढते जाओ। संपूर्ण अविकल उन्नति प्राप्त करो। अपना संपूर्ण विकास करो। आप्यायन क्रिया अपना सम विकास बता रही है। अपनी सत्कार्य करनेकी शक्ति पूर्ण विकसित होनी चाहिये। इसमें बाधा नहीं होनी चाहिये।

२ अनमीवाः, अयक्ष्माः (वा. यजु. १।१)- रोगरहित तथा क्षयरहित रहो। 'अमीव' रोगका नाम है। अप-चित अन्नसे जो रोग होते हैं वे 'अमीव' कहलाते हैं। ये न हों। इस कारण अपचन न हो इसकी सावधानी रखो और इन अपचनसे होनेवाले रोगोंसे अपना बचाव करो। यक्ष्म रोग क्षय कहलाता है। इनको भी दूर रखो।

३ स्तेनः वः मा ईशत। अघशंसः वः मा ईशत (वा. यजु १।१) - चोर तुम्हारे ऊपर शासन न करे, पापी तुम्हारे ऊपर शासन न करे। तुम चोर और पापीके शासनमें न रहो। अपने शासक कैसे हैं इसका विचार करो। और अयोग्य शासकोंका सुधार करनेका उपाय सोचो।

४ कां अधुक्षः ? सा विश्वायुः। सा विश्वकर्मा। सा विश्वधायाः (वा. य. १।५) - किस गौका तुमने दोहन करके किसका दूध पिया है? तुम्हारी गोशालामें 'दीर्घायु' 'कर्मशक्ति' और 'विश्व धारक शक्ति' ये तीन गौवें हैं? इनमेंसे किस गौका तुमने दूध पीया है? क्या तुमने दीर्घायु प्राप्त की? क्या तुमने कौशल्य पूर्ण कर्म शक्ति बढायी अथवा धारणा शक्ति बढाई? तुमने क्या किया? आयुमें तुमने क्या किया?

५ व्रतं चरिष्यामि, तत् शकेयं, तत् मे राध्यतां। (वा० य० १।५)— मैं नियमोंका पालन कर सकूं, वह मुझे सिद्धि देनेवाला हो। मनुष्य उत्तम नियमोंका पालन करनेमें समर्थ बने।

६ रक्षः प्रत्युष्टं, अरातयः प्रत्युष्टाः (वा० य० १।७)- राक्षस दूर हो गये, दान न देनेवाले दूर हो गये। हमारे समाजमें अब कोई राक्षसी वृत्तीके लोग नहीं रहे, अनुदार या दान न देनेवाले भी कोई हमारे समाजमें रहे नहीं हैं।

७ दृंहस्व। माह्नाः। (वा० य० १।९)— तू सुदृढ बन, तू कुटिल न बन। तू शक्ति प्राप्त कर। और अपने स्वभावमें तेढापन न रख।

८ भूताय त्वा। न अरातये। (वा० य० १।११)- प्राणीयोंका हित करनेके लिये तुझे उत्पन्न किया है। शत्रुता करनेके लिये नहीं।

९ प्रोक्षिताः स्थ (वा० य० १।१३)— तुम पवित्र बनकर रहो। अपवित्रताकी ओर कभी न झुको।

१० दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वम् (वा० य० १।१३)- दिव्य कर्म करनेके लिये पवित्र बनो। पवित्र बनो और दिव्य कर्म करो।

११ इषं ऊर्जं आवद (वा० य० १।१६)— अन्न और बल बढानेके सम्बन्धमें बोल। यदि बोलना है तो अन्न और बल बढे ऐसा बोल। अन्न उत्तम मिले और उससे बल बढे ऐसा वक्तृत्व कर।

१२ शर्म असि (वा० य० १।१९)— तू सुखस्वरूप हो। तेरा निज स्वरूप सुखमय है। दुःख आगन्तुक और बाहरसे आता है।

१३ मधुमतीः मधुमतीभिः संपृच्यन्तां (वा० य० १।२१)— मीठी भाषा बोलनेवाले मधुरभाषियोंके साथ मिलकर रहें। दोनों शान्ति बढावें।

१४ मा भेः। मा संविक्थाः। (वा० य० १।२३)- मत डर। मत पीछे हट। सत्कर्म करनेसे पीछे न हट। न डरता हुआ शुभ कर्म करके आगे बढ।

१५ सुक्षमा शिवा स्योना सुषदा ऊर्जस्वती पयस्वती आसि (वा० य० १।२७)– मातृभूमी सुख देनेवाली, कल्याण करनेवाली, हित करनेवाली, उत्तम स्थान देनेवाली, बल बढानेवाली, खानपान देनेवाली हैं। यह जानकर मातृभूमिकी उपासना लोग करें और आनन्दसे अपनी मातृभूमिमें रहें।

१६ तेजः आसि। शुक्रं आसि। अमृतं आसि (वा० य० १।३१)– तू तेजस्वी बलवान तथा अमर आत्मस्वरूपसे हो।

इस तरह वा० यजुर्वेदके प्रथम अध्यायके कुछ वाक्य यहां दिये हैं। ये वचन प्रतिदिन मननपूर्वक पढने योग्य हैं। ये पढे न जानेसे हानि हो रही है। यदि ऐसे वचन अर्थके साथ छपे मिलेंगे, तो लोग पढेंगे और उससे वैदिक धर्म जीवनस्तरमें उतरेगा। यजुर्वेदमें ऐसे वचन करीब चार हजार हैं। अन्य यजुर्वेद संहिताओंमें भी दो सहस्र वचन ऐसे ही उपदेश देनेवाले मिल सकते हैं।

विषयानुसार इनको छांटकर अर्थके साथ जनताके सामने ये वचन आजायंगे तो कितना अच्छा होगा ?

यजुर्वेदके अनुषङ्ग

आजतक अनुषङ्ग सहित यजुर्वेद किसीने छापा नहीं वैसा छापना चाहिये। हमने इस समय तैत्तिरीय संहिता यजुर्वेदकी अनुषङ्ग समेत छापी है और वैसी वाजसनेयी संहिता अनुषङ्ग समेत छापनेकी तैयारी चल रही है।

यह अनुषङ्ग क्या है यह यहां हम बताते हैं। ग्रन्थका विस्तार न हो इसलिये यजुर्वेदके मन्त्र पुनः पुनः मन्त्रभाग का उच्चारण छोडकर यजुर्वेदकी कंडिकाएं संक्षिप्त की हैं। कहांका कितना मन्त्र भाग कहां लेना, इसको अनुषङ्ग कहते हैं। इसका एक उदाहरण हम यहां देते हैं—

विभूरसि प्रवाहणो०-वह्निरसि हव्यवाहनः०। वा० यजु० ५।३१

इस कण्डिकामें कई ऐसे मन्त्रके टुकडे हैं और प्रत्येक मन्त्रके टुकडेके साथ 'रौद्रेणानीकेन पात, माग्नयः पिपृत, माग्नयो गोपायत मा नमो वोऽस्तु मा मा हिंसिष्ट। वा० यजु० ५।३४ यह मन्त्र भाग प्रत्येक मन्त्र खण्डके साथ जोडकर अर्थ समझना चाहिये। १२।१३ वार यह मन्त्र भाग संहितामें दिया नहीं होता। आगेसे या पीछेसे यह लेना होता है। जहां जो अनुषङ्ग लेना है उसका निर्देश यजुर्वेदकी टिप्पणीमें करना योग्य है। वैसा यजुर्वेद आजतक किसीने छापा नहीं। अर्थ करनेवालोंने भी इसका विचार किया नहीं है। जब इस अनुषङ्गके साथ यजुर्वेद छापा जायगा, तब वह अधिक सुबोध होगा। किस मन्त्र भागका किस मन्त्रभागसे सम्बन्ध है यह जाननेके विना न ठीक अर्थ हो सकता है न यज्ञ कर्म ठीक हो सकता है। यजुर्वेद अनेकोंने अनेकवार छापे, पर अनुषङ्ग बताये नहीं। यह दोष हम भविष्यमें दूर करना चाहते हैं।

अन्य वेदोंके सुभाषित

ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेदके पादबद्ध मंत्रोंमें अनेक सुभाषित हैं। उक्त तीनों वेदोंकी सब उपलब्ध संहिताओंमें सब मिलकर २०००० से अधिक सुभाषित हैं। इनका विषयवार संग्रह किया जाय तो दैनिक व्यवहारके तथा दैनिक पाठके लिये वह एक अत्यंत उपयोगी संग्रह हो सकता है। जो वेदपाठ नहीं कर सकते वे भी इसका पाठ करेंगे ऐसा यह संग्रह बोधप्रद तथा सुखसे समझने योग्य ग्रंथ होगा। इसके बनानेके लिये अवश्य बडी मेहनत करनी पडेगी और इसके लिये व्यय भी करना पडेगा। क्योंकि ऐसा परम उपयोगी संग्रह विना व्ययके तैयार होगा ऐसी बात नहीं है। अतः इसके लिये जो आवश्यक व्यय हो वह करना चाहिये और जितना सस्ता दिया जाय उतना देनेका प्रबंध करना आवश्यक है। हम यहां कुछ वैदिक सुभाषितोंके नमूने देते हैं, जिससे इस संग्रहकी कल्पना पाठक कर सकते हैं—

दांतोंकी शुद्धता

स शुचिदन् भूरिचित् अन्ना सद्यः समत्ति।

ऋ० ७।४।२

'वह उत्तम शुद्ध दंतवाला बहुत अन्न खाता है।' यहां दांत शुद्ध रखनेका बोध है वह महत्त्वपूर्ण उपदेश है। दांत स्वच्छ न रहे तो अनेक रोग होते हैं इसलिये 'अ-शोणा दन्ताः' (अ. १९।६०।१) दांत स्वच्छ रहने चाहिये ऐसा कहा है।

अज्ञानकी निन्दा और ज्ञानीकी प्रशंसा

अचेतनस्य पथः मा विदुक्षः। ऋ. ७।४।७

'अज्ञानीके मार्गसे हम न जांय।' अथवा कोई अज्ञानी के मार्गसे न जाय। तथा--

चिकित्वांसः अचेतसं अनिमिषा नयन्ति ।

ऋ. ७।६०।७

'ज्ञानी लोग अज्ञानीको योग्य मार्गसे आंखें खोलकर ले जाते हैं।' अज्ञानी लोग यदि ज्ञानीकी संगतिमें रहने लगे तो वे सुधरते हैं। ज्ञानी उनकी सहायता करते हैं और उनको उत्तम मार्गसे चलाते हैं और उन्नतिकी ओर ले जाते हैं।

अर्यः देवः अचितः अचेतयत् । ऋ. ७।८६।७

'श्रेष्ठ ज्ञानी अज्ञानीको ज्ञानवान् बनाता है।' और देखो—

अचितः परा शृणीत । ऋ० ७।१०४।१

'अज्ञानियोंको दूर करो' अर्थात् अपने समाजमें अज्ञानी न रहें ऐसा करो। सबको ज्ञानी बना दो।

सन्मार्गसे चलो

साधिष्टेभिः पथिभिः प्र नयन्तु । ऋ. ७।६४।३

'उत्तम साधनोंसे युक्त मार्गसे हमें ले चलें।' अर्थात् मार्ग ऐसे हों कि जो सुखकर हों और ठीक उन्नतितक पहुंचानेवाले हों।

उत्तम बुद्धि प्राप्त करो

प्रशस्तां धियं पनयन्तः । ऋ. ७।१।१०

शुक्रा मनीषा देवी । ऋ. ७।३४।१

देवीं धियं अभिदधिध्वं । ७।३४।९

'प्रशस्त बुद्धिकी प्रशंसा करो। बल बढानेवाली दिव्य बुद्धिका धारण करो। दिव्य गुणवाली बुद्धिको धारण करो।' इस तरह उत्तम बुद्धिको धारण करनेके विषयमें कहा है।

शरीरका संवर्धन कर

अपने शरीरका संवर्धन करनेके विषयमें अच्छे आदेश हैं देखिये–

स्वयं तन्वं वर्धस्व । ऋ० ७।८।५

ऊर्जः न-पात् । ऋ० ७।१६।१

'अपने शरीरको बढाओ। बलको न गिरानेवाला बनो।' अपने शरीरकी उन्नति करना प्रत्येकका धर्म है। यह आवश्यक कर्तव्य है।

अपना घर हो

अपना निज घर हो इस विषयमें ये वचन देखिये–

नृणां मा निषदाम । ऋ० ७।१।११

स्वे दुरोणे समिद्ध दीदाय । ऋ० ७।१२।१

शुने मा निषदाम । ऋ० ७।१।११

'दूसरेके घरमें हम न रहें। अपने घरमें तेजस्वी बनकर हम रहें। शून्य घरमें अर्थात् जिसमें कोई रहते नहीं ऐसे शून्य स्थानमें हम न रहें।

अहं मृन्मयं गृहं मो गमं सु । ऋ० ७।८९।१

'हम मिट्टीके घरमें न रहें।' अर्थात् हमें रहनेके लिये उत्तम पक्का घर मिले।

इस प्रकार सहस्रों सुभाषित हैं जो दैनिक व्यवहारका बोध देते हैं। अतः इन वचनोंका विषयानुसार संग्रह होगा तो वह देखकर हरएक मनुष्य वेदके ज्ञानसे परिचित होगा और वेदके धर्मको अपने दैनंदिन जीवनमें हरएक पाठक ला सकेगा।

यहांतक हमने चारों वेदोंकी व्यवस्था वेदको दैनंदिनके व्यवहारमें लानेके लिये कैसी करनी चाहिये यह बताया है। पाठक इसका मनन करें और वेदको मानवके दैनिक दिव्य धर्मके आचरणका ग्रन्थ बनावे।

हरएक मनुष्य कृतकृत्य बननेके लिये जो अनुष्ठान करना आवश्यक है, वह इस संग्रह ग्रन्थसे मनुष्य जान सकते हैं। इस कारण यह संग्रह ग्रन्थ शीघ्र बने ऐसा यत्न करना विद्वानोंका कर्तव्य है।

विद्वान् इसे बनावे, धनिक इसके लिये व्यय करें। ऐसा यह संग्रह ग्रन्थ अतिशीघ्र प्रकाशित किया जावे।